परशुराम चालीसा

॥दोहा॥

श्री गुरु चरण सरोज छवि,

निज मन मन्दिर धारि।

सुमरि गजानन शारदा,

गहि आशिष त्रिपुरारि॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

बुद्धिहीन जन जानिये,

अवगुणों का भण्डार।

बरणौं परशुराम सुयश,

निज मति के अनुसार॥

॥ चौपाई॥

जय प्रभु परशुराम सुख सागर,

जय मुनीश गुण ज्ञान दिवाकर।

हिन्दीपथ.कॉम

भृगुकुल मुकुट बिकट रणधीरा,

क्षत्रिय तेज मुख संत शरीरा।

जमदग्नी सुत रेणुका जाया,
तेज प्रताप सकल जग छाया।

मास बैसाख सित पच्छ उदारा,
तृतीया पुनर्वसु मनुहारा।

प्रहर प्रथम निशा शीत न घामा,
तिथि प्रदोष ब्यापि सुखधामा।

तब ऋषि कुटीर रुदन शिशु कीन्हा,
रेणुका कोखि जनम हरि लीन्हा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

निज घर उच्च ग्रह छः ठाढ़े,
मिथुन राशि राहु सुख गाढ़े।

तेज-ज्ञान मिल नर तनु धारा,
जमदग्नी घर ब्रह्म अवतारा।

धरा राम शिशु पावन नामा,
नाम जपत जग लह विश्रामा।

भाल त्रिपुण्ड जटा सिर सुन्दर,
कांधे मुंज जनेउ मनहर।

हिन्दीपथ.कॉम

मंजु मेखला कटि मृगछाला,
रूद्र माला बर वक्ष बिशाला।

पीत बसन सुन्दर तनु सोहें,
कंध तुणीर धनुष मन मोहें।

वेद-पुराण-श्रुति-समृति ज्ञाता,
क्रोध रूप तुम जग विख्याता।

दायें हाथ श्रीपरशु उठावा,
वेद-संहिता बायें सुहावा।

हिन्दीपथ.कॉम

विद्यावान गुण ज्ञान अपारा,

शास्त्र-शस्त्र दोउ पर अधिकारा।

भुवन चारिदस अरू नवखंडा,

चहुं दिशि सुयश प्रताप प्रचंडा।

एक बार गणपतिजी के संगा,

जूझे भृगुकुल कमल पतंगा।

दांत तोड़ रण कीन्ह विरामा,

एक दन्त गणपति भयो नामा।

हिन्दीपथ.कॉम

कार्तवीर्य अर्जुन भूपाला,

सहस्त्रबाहु दुर्जन विकराला।

सुरगऊ लखि जमदग्नी पांही,

रखिहहुं निज घर ठानि मन मांहीं।

मिली न मांगि तब कीन्ह लड़ाई,

भयो पराजित जगत हंसाई।

तन खल हृदय भई रिस गाढ़ी,

रिपुता मुनि सौं अतिसय बाढ़ी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

ऋषिवर रहे ध्यान लवलीना,

तिन्ह पर शक्तिघात नृप कीन्हा।

लगत शक्ति जमदग्नी निपाता,

मनहुँ क्षत्रिकुल बाम विधाता।

पितु- -बध मातु-रुदन सुनि भारा,

भा अति क्रोध मन शोक अपारा।

कर गहि तीक्षण परशु कराला,

दुष्ट हनन कीन्हेउ तत्काला।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

क्षत्रिय रुधिर पितु तर्पण कीन्हा,
पितु-बध प्रतिशोध सुत लीन्हा।

इक्कीस बार भू क्षत्रिय बिहीनी,
छीन धरा बिप्रन्ह कहँ दीनी।

जुग त्रेता कर चरित सुहाई,
शिव-धनु भंग कीन्ह रघुराई।

गुरु धनु भंजक रिपु करि जाना,
तब समूल नाश ताहि ठाना।

हिन्दीपथ.कॉम

कर जोरि तब राम रघुराई,

विनय कीन्ही पुनि शक्ति दिखाई।

भीष्म द्रोण कर्ण बलवन्ता,

भये शिष्या द्वापर महँ अनन्ता।

शस्त्र विद्या देह सुयश कमाव,

गुरु प्रताप दिगन्त फिरावा।

चारों युग तव महिमा गाई,

सुर मुनि मनुज दनुज समुदाई।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

देसी कश्यप सों संपदा भाई,
तप कीन्हा महेन्द्र गिरि जाई।

अब लौं लीन समाधि नाथा,
सकल लोक नावइ नित माथा।

चारों वर्ण एक सम जाना,
समदर्शी प्रभु तुम भगवाना।

ललहिं चारि फल शरण तुम्हारी,
देव दनुज नर भूप भिखारी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

जो यह पढ़े श्री परशु चालीसा,

तिन्ह अनुकूल सदा गौरीसा।

पूर्णेन्दु निसि बासर स्वामी,

बसहु हृदय प्रभु अन्तरयामी।

॥ दोहा ॥

परशुराम को चारू चरित,

मेटत सकल अज्ञान।

शरण पड़े को देत प्रभु,

सदा सुयश सम्मान।

हिंदीपथ.कॉम

॥ श्लोक ॥

भृगुदेव कुलं भानुं सहस्रबाहुर्मर्दनम्।

रेणुका नयना नंद परशुंवन्दे विप्रधनम्॥

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य चालीसा पढ़े

- हनुमान चालीसा
- शिव चालीसा
- दुर्गा चालीसा
- शनि चालीसा
- गणेश चालीसा
- लक्ष्मी चालीसा
- राम चालीसा
- विष्णु चालीसा
- गायत्री चालीसा
- काली चालीसा
- भैरव चालीसा
- सरस्वती चालीसा
- कृष्ण चालीसा
- सूर्य चालीसा
- महावीर चालीसा
- साईं चालीसा
- महाकाली चालीसा
- तुलसी चालीसा
- बगलामुखी चालीसा
- गोरख चालीसा
- गोपाल चालीसा
- नवग्रह चालीसा
- रविदास चालीसा
- बाला जी चालीसा
- महालक्ष्मी चालीसा
- पार्वती चालीसा

- खाटू श्याम चालीसा
- रामदेव चालीसा
- राधा चालीसा
- विश्वकर्मा चालीसा
- पितर चालीसा
- बटुक भैरव चालीसा
- जाहरवीर चालीसा
- गिरिराज चालीसा
- नर्मदा चालीसा
- प्रेतराज चालीसा
- संतोषी चालीसा
- गंगा चालीसा
- शारदा चालीसा
- ललिता चालीसा
- अन्नपूर्णा चालीसा
- श्री वैष्णो चालीसा
- परशुराम चालीसा
- विन्ध्येश्वरी चालीसा
- ब्रह्मा चालीसा
- शाकम्भरी चालीसा
- राणी सती चालीसा
- गंगाराम चालीसा
- बालक नाथ चालीसा
- मोहन राम चालीसा
- शीतला चालीसा

हिन्दीपथ.कॉम